मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख सलंग अंक ११० जून-२०१६

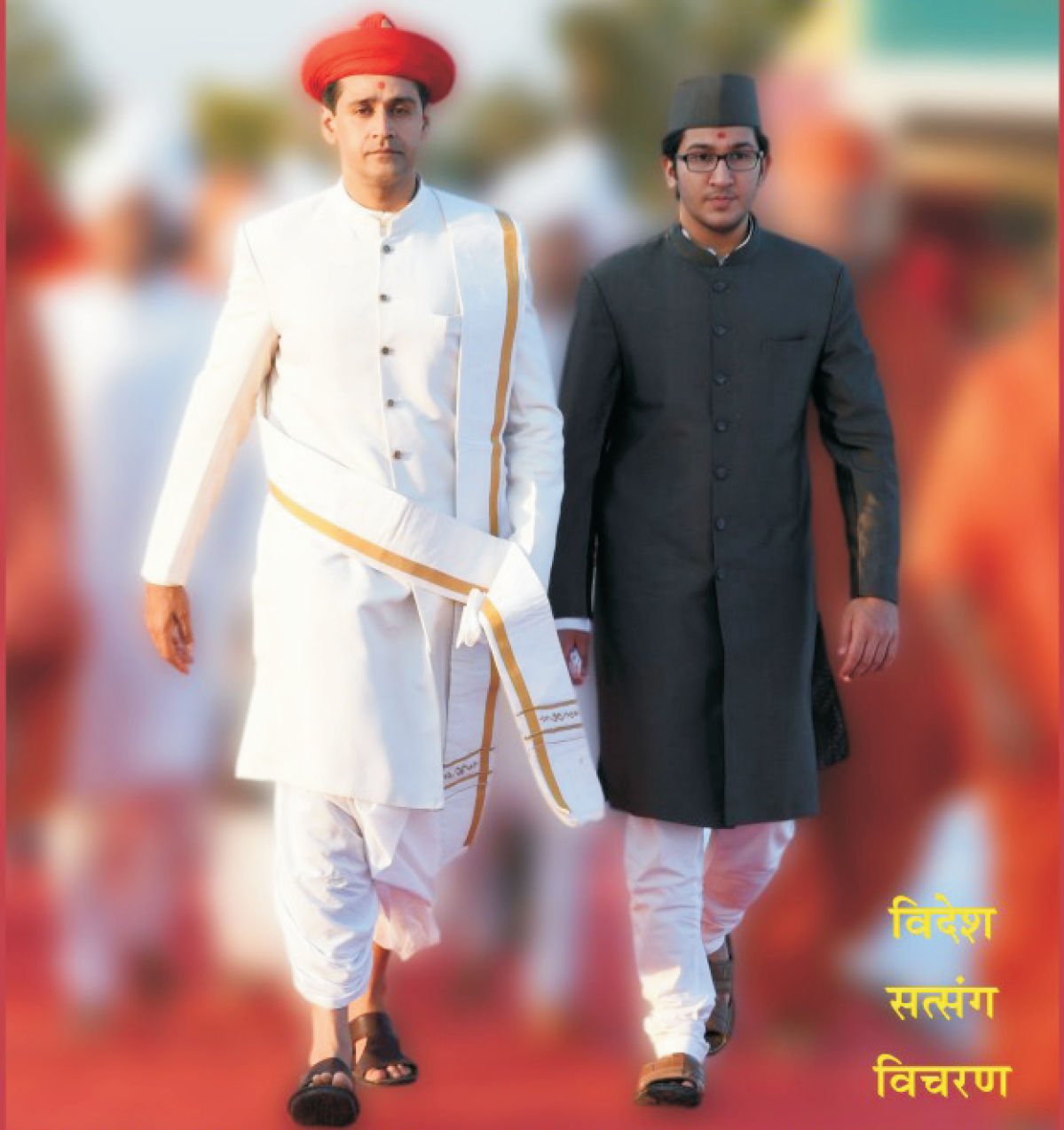

विदेश

सत्संग

विचरण

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर सायरा के तीसरे पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री ।(२) अमदावाद मंदिर में राजकोट महिला मंडल द्वारा आयोजित कथा पारायण की पूर्णाहुति करते हुये पू.महंत स्वामी तथा ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी तथा वक्ता शा.स्वा. वासुदेवचरणदासजी ।(३) श्री स्वामिनारायण मंदिर वसई (डाभला) में प.पू. आचार्य महाराजश्री के पदार्पण प्रसंग पर आशीर्वाद प्राप्त करते हुये यजमान परिवार तथा पू. पी.पी. स्वामी , नारायण स्वामी (महेसाणा) तथा कोठारी जे. के. स्वामी आदि संत तथा सभा में लाभ लेते हुए हरिभक्त ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १० ● अंक : ११०

जून-२०१६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	शरण से चरण की यात्रा	६
०४.	दर्शन की रीति	८
०५.	एकांतिक भक्त की व्याख्या तथा लक्षण	१०
०६.	जेतलपुर के ऐतिहासिक देव सागर सरोवर में सहजानंद स्वामीने पार्षदो के साथ अनेकवार जलक्रीडा की थी	१२
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१५
०८.	सत्संग बालवाटिका	१७
०९.	भक्ति सुधा	१८
१०.	सत्संग समाचार	२१

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

अस्मदीयम्

''प्रत्यक्ष भगवाननी जे मूर्ति ने बीजा जे मायिक आकार ए बेय ने विषे तो घणो फेर छे ? पण जे अज्ञानी छे ने अतिशय मूर्ख छे ते तो भगवान अने मायिक आकारने सरखा जाणे छे, केम जे, मायिक आकारना जे जोनारा छे ने मायिक आकारना जे चिंतवन करनारा छे, ते तो अनंतकोटि कल्प सुधी नरक चोराशीने विषे भमे छे, अने जे भगवानना स्वरुपना दर्शन करनारा छे ने भगवानना स्वरुपना चिंतवन करनारा छे, ते तो काल, कर्म ने माया ए सर्वेना बंधन थकी छूटीने अभय पदने पामे छे, ने भगवानना पार्षद थाय छे ? माटे अमारे तो भगवाननी कथा, कीर्तन के वार्ता के भगवाननुं ध्यान एमांथी कोई काले मने तृप्ति थतीज नथी, ने तमारे पण सर्वेने एवी रीते ज करवुं'' (व.म.म. ४९)

प्रिय भक्तों ! हम तो सर्वोपरि सर्व अवतार के अवतारी श्री स्वामिनारायण भगवान के आश्रित हैं, अपनी उपासना सर्वोपरि श्रीहरि के प्रति विशेष दृढ हो ऐसी परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मई-२०१६)

४ स्वदेश आगमन।
५ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) पदार्पण।
६ श्री स्वामिनारायण मंदिर गडाणी-कच्छ पदार्पण।
८ श्री स्वामिनारायण मंदिर भारासर-कच्छ पदार्पण।
१०-११ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज-कच्छ श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर सादरा (जि. गांधीनगर) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर राबडीया (पंचमहाल) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर सुखपर (रोहा-कच्छ) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपर (कच्छ) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटी आदरज पाटोत्सव प्रसंग पर तथा वसई (डाभला) श्री स्वामिनारायण मंदिर पदार्पण।
१८-१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कोडाई (कच्छ) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कालोनी (बापूनगर) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर महिसा वासणा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर खेरोल पुनः मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
रात्रि में भुज (कच्छ) पदार्पण।
२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२८-२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर सुखपर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
३० श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमनगर (भक्तिनगर) तथा न्यु राणीप श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
३१ से १४ जून यु.के. तथा अमेरिका धर्मप्रवास।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मई-२०१६)

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर जीरागढ कथा प्रसंग पर पदार्पण।
२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर सायरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा ता. वीजापुर कथा प्रसंग पर पदार्पण।

शरण से चरण की यात्रा

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

भगवान का दर्शन करने जब मंदिर में जांय तो जिस तरह वर्णित है उस पद्धति से दर्शन करना चाहिए। मन तथा नेत्र की चंचलता दूर करके एकाग्रमन से सर्व प्रथम प्रभु के चरण का दर्शन करना चाहिए। भगवान के चरण में ''मां'' भक्ति का वास है। भक्ति तत्व दृष्टि को आधार बनाकर मुखारविंद का दर्शन करना चाहिए। सामुद्रिक शास्त्र में बताया गया है कि प्रत्येक मनुष्य की शरीर में पैर मा के जैसा होता है। मस्तक-हाथ तथा स्वर पिता की तरह होता है। माता अवशेष चरण तथा आंखो में देखने को मिलेंगी। माता इतनी सरल होती है कि संतान के चरण में रहना पसन्द करती है। चरण जननी का प्रतीक है। अपने नंद संत जिन कीर्तनो की रचना की है वे प्राय: सभी कीर्तन चरण वर्णन से युक्त है। जिस मूर्ति में प्रथम चरण दर्शन किया जाय तो उसे सम्पूर्ण मूर्ति के अंगो का दर्शन हो गया कहलाता है। मुक्तानंद स्वामी ने कालवाणी में जब भगवान की आरती की रचना की तो प्रथम पद में ही ''चरण सरोज तमारा वंदु कर जोडी'' आरती का दीपक प्रथम चरण में समर्पित किये। पूजाविधिमें भी प्रथम चरण की आरती करने का विधान है। वंदन भक्ति में भगवान के चरण में नत मस्तक होने का विधान है। इससे मस्तक में रही जो बुद्धि है उसमें भक्ति का आविर्भाव होता है। भगवान के चरण में मस्तक झुकाने की श्रद्धा न होतो संत-महा पुरुष, मां-बाप के चरण को हाथ से स्पर्श करके आंख में लगाना चाहिए, आंख भी मां की प्रतीक है। आंख में भी भक्तितत्व का वास है। इसका मतलब यह कि हाथ से चरण में विराजमान भक्तितत्व को आंख में प्रतिष्ठित करते हैं। श्रद्धापूर्वक वंदन करना हो तो चरण रज को आंख में लगानी चाहिए। यह भी संभव न होता हो तो हाथ जोड़कर मौन होकर दूर से वंदन करना चाहिए।

अपनी भारतीय परंपरा में सभी मत के अनुयायियों में एक जैसी ही प्रथा है - चाहे वद शैव हो, वैष्णव हो, शाक्त हो, सभी भगवान की या गुरु की पादुका का पूजन करते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि पादुका पूजन से संपूर्ण स्वरुप की पूजा हो जाती है। रामावतार के समय राम वन पधारे तो भरतजी राज गद्दी पर नहीं बैठे परंतु राम राजा है इस भाव से उनकी पादुका को गद्दी पर रखकर पूजन करते थे। आज भी कितने संप्रदाय पादुका का ही पूजन करते हैं। शास्त्रो में ऐसा लिखा गया है कि भगवान के चरण में सोलह चिन्ह होते हैं। उनके चरणों में अडसठ तीर्थों का वास है। इसका मतलब चरण के दर्शन से सभी तीर्थो का फल मिलता है

।

नवधा भक्ति में पाद सेवन भक्ति का खूब महत्व है। श्रीजी महाराज जब धरमपुर पधारे उस समय वहाँ की राजमाता कुशल कुंवरबाने अपनी राज गद्दी देने की वात की और कहीं कि अब आप यही रहिए । उस समय श्रीहरिने कपड़े के ऊपर अपने चरणारविंद की छाप देकर कहे कि इसे आप अपने पास रखिये इस चरणारविंद के रुप में मैं सदा यहाँ निवास करुंगा । जब भी श्रीहरि संत-भक्त पर प्रसन्न होते तो अपने चरणारविंद की छाप देते, जो आज भी वह छाप गाँवो-गाँवो में दृष्टिपथ पर आती है । कितने संतो की छाती पर भी चरणारविंद की छाप दिये हैं । अपने श्री स्वामिनारायण म्युजियम में विविधप्रकार के करीब ५५० जितने चरणारविंद का दर्शन होता है । जिस में कुम कुम, चंदन से कपडे या कागज के ऊपर की छाप विद्यमान है । इन सभी का खूब ध्यान पूर्वक आप लोग दर्शन कीजियेगा । इस में महाराज के सोलह चिन्हों के दर्शन मिलेगे । चरणारविंद की दिव्य संपत्ति अपने संप्रदाय के अलांवा अन्यत्र कहीं नहीं है।

अपने नंद संत गद्य-पद्य की रचना में स्वयं को ''चरण सेवक'' ऐसा संबोधन करते । श्रीहरिने जेतलपुर के वचनामृत में बोले कि ''लक्ष्मणजी १४ वर्ष तक राम-सीताजी के साथ वन में रहे लेकिन उनकी दृष्टि चरण के सिवाय अन्यत्र नहीं गई, क्योंकि हनुमानजी सीताजीके आभूषण लेकर आये तो उसमें पैर की पायल ही पहचान पाये, ऐसा कहकर श्रीहरि ने लक्ष्मणजी को पति की संज्ञा दी है।

कितने पुराणों का मत है कि चरणस्पर्श करने से आयु की वृद्धि होती है । क्योंकि याज्ञवल्क्य जब छोटे थे तब उनकी अल्पायुथी उसी समय अनेक संत पधारे, वे साष्टांग वंदन किये तो संत आशीर्वाद देते हुए कहे कि ''चिरायु:भव'' इससे वे चिरायु हो गये ।

जब भगवान राम वन में पधारे तब गंगापार होने के लिये केवट से कहे तब केवट ने कहा कि जब तक चरण आप धुलवायेंगे नहीं तब तक मैं अपनी नाव में नही बैठाऊंगा, इससे केवट साधकों में सर्वश्रेष्ठ कहा गया ।

भक्त कवि भी ऐसी ही कल्पना करते हैं ''वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्'' जो मुमुक्षु चरण की उपासना करने वाले है उन्हें पुन: माता के गर्भ में नहीं आना पड़ता । प्रेमानंद स्वामीने वंदु के पद में एक सम्पूर्ण पद ''वाला तारा युगल चरण रसरुप'' इस तरह चरण के विषय में गाया है । श्रीहरि कहते हैं कि जिन्हें इस प्रकार की स्थिति हो ऐसे संत को साष्टांग दंडवत प्रणाम करने से कभी गर्भवास नहीं मिलेगा ।

साधना की शुराआत चरण से तथा पूर्णाहुति चरण से जो चरणारविंद तक पहुंचा वह साधनाकी शिखर तक पहुंच सकता है।

एक वार श्रीहरिने मूलजी ब्रह्मचारी को पादुका में तेल चोपडने की वात की लेकिन वही सेवा किसी भक्तने मूलजी ब्रह्मचारी से मांगली और वह सेवा ब्रह्मचारी ने उस भक्त को देदी इससे श्रीहरि नाराज हो गये परिणाम स्वरुप अपनी सेवा से छ महीने तक निकाल दिये । चरण की सेवा मिले तो समझियेगा कि श्रीहरिने दिया है । अवसर मिलने पर सेवा न की जाय तो यह समझना चाहिए कि सेवा में से हमारा नाम निकल गया है । परिणाम स्वरुप महाराज के नहीं अपितु ''माया'' के सेवक कहे जायेंगे ।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

दर्शन की रीति

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अमदावाद)

दर्शन करने की अलग एक परंपरा है । वचनामृत सारंगपुर के दूसेर प्रकरण में श्रीजी महाराजने दर्शन की रीति का निरुपण किया है।

अपने संप्रदाय में उत्सवों की परंपरा है। प्रत्येक वर्ष शाकोत्सव, वार्षिक पाटोत्सव या अन्य उत्सव साल भर चलता ही रहता है । प.पू. आचार्य महाराजश्री अथक परिश्रम करके संप्रदाय की पुष्टि के लिये तथा प्रचार प्रसार के लिये सतत प्रयत्नशील रहते हैं। इसी लिये देश-विदेश धर्मयात्रा हेतु विचरण करते रहते हैं । इसके परिणाम स्वरुप सत्संग का विस्तार हुआ है और सत्संगी खूब बढे हैं।

श्रीहरि की आज्ञा भी है कि ''हमारे सत्संगी प्रतिदिन मंदिर दर्शन करने जांय। दर्शन करने जाते भी है, विशेष रुप से एकादशी - पूनम को अगल-बगल गाँव से भक्तों का समुदाय दर्शन करने आता है।

प्रत्येक वर्ष में फाल्गुन शुक्ल-३ को श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव आता है, इस दिन तो विना निमंत्रण के लोग दर्शनार्थ आते हैं । जिन श्री नरनारायणधेव की सर्वप्रथम प्रतिष्ठा श्रीहरिने की उन देव के पाटोत्सव में दर्शन के लिये विना निमंत्रण के हजारों भक्त उमड पडते हैं।

वर्तमान समय में चेनल टी.वी. नेटवर्क इत्यादि की सुविधा होने से मंदिर के पटांगण में टी.वी. द्वारा अभिषेक विधिका प्रत्यक्ष प्रसारण सभी लोग देखते हैं । प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री इस त्रिवेणी संगम द्वारा श्रीहरि के अपर तीनो स्वरुपों द्वारा श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव, धर्मपिता-भक्तिमाता-हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार विधिसे अभिषेक किया गया था। जिस में दूध-दहीं-घृत-मंधु- शर्करा इत्यादि पांच तत्वों से एवं चंदन केसर युक्त जल से अभिषेक किया गया था।

उस समय दर्शन का अनोखा आनंद सभी को मिल रहा था । यही अद्‌भुत श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव सभी को आनंद के साथ सुख भी प्रदान करता है।

स्त्री-पुरुष से पुरा मंदिर खचोखच भर जाता है। भक्तों की इतनी भीड हो जाती है कि जैसे गंगा यमुना का संगम हो गया है, दर्शन की उत्कट इच्छा के कारण मानव मेदिनी अपनापन खो देती है। अभिषेक-आरती पूरा होते ही श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप भीगे वस्त्र में ही भक्तों को दर्शन के लिये बाहर जब पधारते है तब भक्तों को भीड चरण स्पर्श करने के लिये खड़ी रहती है। एक दूसरे की धक्का मुक्की भी इस अवसर पर सराहनीय कहा जायेगी। कितने लोग तो महाराजश्री के शरीरका उनके वस्त्र का भाव से दौड़ कर स्पर्श करते हैं, लेकिन यह

ठीक नहीं कहा जायेगा, इसमें मर्यादा नहीं रहती। प.पू. महाराजश्री की दृष्टि तो सभी के ऊपर रहती ही है, उनके अन्तर की प्रसन्नता ही पर्याप्त है।

नित्य दर्शन के लिये आनेवाले स्त्री-पुरुष को भी दर्शन की रीति का यथार्थ पालन करना चाहिए। बहनो को पुरुषों के पीछे लाईन में खड़ी होकर दर्शन करने का नियम है, पुरुष भी अपने विभाग में रहकर एक लाईन में खड़े होकर दर्शन करें । इससे पीछे वाले व्यक्ति को दर्शन करने में सरलता रहे।

सबसे आगेवाली लाइन (विभाग) में संत लोग दर्शन करते हैं वहाँ भी कुछ पुरुष वर्ग दर्शन के लिये चले जाते हैं, लेकिन एकादशी पूनम को जब खूब भीड रहती है उस समय वहाँ जाने का दुराग्रह करना योग्य नहीं है।

वसंत पंचमी को मूली में भी पाटोत्सव-वसंत पंचमी के उत्सव का लाभ लेने के लिये जन मेदिनी उभड़ पडती है, उस समय भी सत्संगी को मर्यादा का ख्याल रखना चाहिये।

अपना संप्रदाय आचरण का संप्रदाय है, इसी आचरण से सत्संगी की शोभा है। श्रीहरि के मनोमूर्ति के सामने खड़ा रहकर दर्शन करेंगे तो ही दर्शन का सुख कहा जायेगा तो यह मान्यता ठीक नहीं है।

श्रीहरि कहते हैं कि ''भगवान का दर्शन एकनिमेष मात्र भी हो जाय तो संपूर्ण ब्रह्मांड का सुख उसमें समाया हुआ है।

नजदीक से या दूर से यदि मन दृष्टि दोनो का एकाग्रपना हो तो दर्शन सुख की प्राप्ति का सच्चा सुख मिलेगा । नजदीक जाकर दर्शन करने के दुराग्रह से अच्छा है दूर से क्षण मात्र भी प्रभु की झांकी का दर्शन हो जाय।

धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री के दर्शन के समय भी मर्यादा रखना आवश्यक है । चरण स्पर्श करने को मिले तो ठीक अन्यथा दूर से ही खड़े-खड़े दर्शन करके वंदन करलेना उचित रहेगा।

श्री स्वामिनारायण मासिक के एड्रेस में बदलाव या अंक न मिलने पर संपर्क सूत्र - मो. : ९०९९० ९८९६९

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर गेस्ट हाउस का सम्पर्क सूत्र

भावेशभाई मो. : ९९१३५ ३७०३५

मोहनभाई मो. : ९५५८१ ६४५४१

एकांतिक भक्त की व्याख्या तथा लक्षण

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

सर्वावतारी सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का एकांतिक भक्त होना बहुत बडी बात है । लेकिन एकांतिक भक्त की व्याख्या स्वयं श्रीहरि के मुख से वचनामृत में जिस तरह की गयी है, उसे समझे तो यथार्थ ज्ञान कहा जायेगा । इस एकांतिक की व्याख्या में कदाचित हम आते हो तो ठीक, हम से भी कोई आगे हो तो एकांतिक की गणना में स्व प्रशंसा होने से दोष के भागी बनेंगे । जो कुछ धर्म का आचरण या श्रीहरि की आज्ञा का पालन करें तो मात्र श्रीहरि को प्रसन्न करने के लिये करना चाहिए । श्रीहरि का दासानुदास रहने से ही श्रीहरि अपने ऊपर प्रसन्न होंगे । धर्म का नियम पूर्वक पालन करने से एकांतिक की व्याख्या नहीं हो जायेगी । श्रीहरिने बहुत सारे वचनामृत में एकांतिक भक्त के लक्षण कहे हैं । यहाँ संक्षेप में कहते हैं - श्रीहरिने सच्चे त्यागी के ल७ण कहे, बाद में राजाजनक का दृष्टांत देकर गृहस्थ भक्त की स्थिति बताई है । श्रीहरि कहते हैं कि - जनक राजा थे वे राज्य करते लेकिन मन योगेश्वर की तरह था । जनक राजा का एक वाक्य बहुत प्रसिद्ध है - ''यह मेरी मिथिला नगरी जर रही है, लेकिन उसमें मेरा कुछ भी नहीं'' श्रीहरि कहते हैं कि इस स्थिति वाला जो भक्त हो तो उसे एकांतिक भक्त कहा जायेगा । ऐसी स्थिति न हो तो उसे प्राकृत भक्त कहा जायेगा ।

श्रीहरिने भक्तों के लिये चार प्रकार की निष्ठा का निरुपण किया है । सभी निष्ठा का अलग-अलग लक्षण बताया है । धर्म निष्ठा, आत्मनिष्ठा, वैराग्य निष्ठा, भक्ति निष्ठा इन सभी निष्ठाओं में प्रत्येक भक्त में एक निष्ठा की प्रधानता होती है । इसके अलांवा अन्य निष्ठा गौण रुप में रहती हैं । श्रीहरिने यह बताया कि जिस में चारो निष्ठा एक साथ होती है वह भागवत या एकान्तिक भक्त कहा जायेगा । श्रीहरिने बताया कि सभी साधनों मे वासना को दूर करना सबसे कठिन है । वासना रहित व्यक्ति ही एकांतिक धर्मवाला कहा जायेगा । किसी में थोडी भी वासना रह गई हो तो वह चाहे समाधिवाला हो तो भी वह पतित हो जाता है ।

श्रीकृष्ण भगवान जब अर्जुन के साथ द्वारिका से रथ में बैठकर भौमापुरुष के पास से ब्राह्मण पुत्र को साथ लेकर वापस आ रहे थे तब दिव्य मूर्ति श्रीकृष्ण भगवानने अपने प्रताप से लकड़े के रथ एवं घोडो को भी दिव्य बना दिया, उस में माया का आवरण स्पर्श भी नहीं कर सका । इस तरह का उदाहरण देकर महाराजने कहा कि भगवान की कृपा से मायिकपदार्थ अमायिक हो गये, तो मूर्ख लोग ही भगवान के स्वरुप को मायिक मानते हैं । जो एकांतिक संत हैं वे भगवान की मूर्ति को अक्षरातीत मानते हैं । इसके साथ ही पुरुषोत्तम भगवान को ब्रह्मरुप, तथा अनंतकोटि मुक्तों को एवं अक्षरधाम को आत्मा मानते हैं ।

इसलिये चाहे जितना भी शास्त्र का अध्ययन किया हो और भगवान को निर्गुण समझता हो, मूर्ति की महिमा भी समझता हो तो भी भगवान तो सदा मूर्तिमान ही हैं। इस तरह जो समझता है उसे एकांतिक भक्त कहेंगे। श्रीहरिने बताया कि जिसमें आत्मनिष्ठा हो और वैराग्य भी हो तथा भगवान में प्रीति भी हो तो वह समझता है कि "मेरी जीवात्मा के लिये ही भगवान की मूर्ति अखंड विराजमान है उसीका दर्शन-स्पर्श-पूजन आतुरता पूर्वक करनी चाहिए। जो इस तरह करता है एवं उसमें कुसंग नहीं आता भगवान में निष्ठा कम नहीं होती तो वह भक्त एकांतिक कहा जायेगा।

महा भारत के युद्ध में अर्जुन का दृष्टांत देते हुए श्रीहरिने कहा कि "जिन्हे सबकी अपेक्षा भगवत्स्वरुप का बल अधिक है - वही एकांतिक भक्त कहा जायेगा।

श्रीहरिने कहा कि "एकांतिक भक्त वह है जो स्वयं को ब्रह्मरुप मानकर परब्रह्म परमात्मा का ध्यान, स्मरण, उपासना करता है, उसे एकांतिक भक्त कहेंगे। एकांतिक भक्त देह से मरने को मरना नहीं मानते, बल्कि एकांतिक धर्म से गिरजाने को मरना मानते हैं।

एकांतिक भक्त के अन्तर में अखंड भगवान का चिंतन होता रहता है। ऐसे भक्त को पांच प्रकार के विषय स्पर्श नहीं कर सकते। उसका मन-कर्म-वचन भगवान की कथा श्रवण में लगा रहता है, रसना भगवान के प्रसाद ग्रहण में लगी रहती है, नासिका भगवान को अर्पित तुलसी-पुष्प के गन्धलेने में लगी रहती है। इस तरहजो हो उसे एकांतिक भक्त कहेंगे।

भगवान का जो स्वरुप अक्षरधाम में है वही स्वरुप पृथ्वी पर मनुष्य रुप में है ऐसा जो समझता है, उसमें लेश मात्र भी अन्तर नहीं समझता है वही एकांतिक भक्त है। परिपक्वभावना वाला भक्त ही भगवान का एकांतिक भक्त कहा जायेगा। जिन्होंने भगवान की महिमा को यथार्थ रुप में समझ लिया और उसे अपने हृदय में उतार लिया वह एकांतिक भक्त कहा जायेगा। जो ईश्वर के सिवाय जगत के व्यवहार को तुच्छ मानता है वही एकान्तिक भक्त है।

श्रीहरिने कहा - "आपना उद्धव संप्रदाय ने विषे ज्ञान, वैराग्य धर्म अने भगवाननी भक्ति, ए चार वानां जेमां होय ते एकांतिक भक्त कहेवाय। अने आपणा सत्संगमां मोटो करवा योग्य पण तेज छे।

भगवान का भक्तकैसा होना चाहिए तो चार प्रकार की मुक्ति की भी जो चाहना न करे, दूसरे पदार्थ की क्या वात ? ऐसे भक्त को एकांतिक भक्त कहा जायेगा। अपने संप्रदाय में आज भी - जो भक्त स्वधर्म, वैराग्य, तथा माहात्म्य युक्त भक्ति करता है उसे एकांतिक भक्त कहा जायेगा। आज भी अपने संप्रदाय में एकांतिक भक्त हैं जो संप्रदाय के नीति-नियम में रहकर श्रीहरि द्वारा प्रतिष्ठित श्री नरनारायणदेवादिक देवों में तथा धर्मवंशी आचार्य में आत्म समर्पित भाव रखते हैं।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५
● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

जेतलपुर के ऐतिहासिक देव सागर सरोवर में सहजानंद स्वामीने पार्षदो के साथ अनेकवार जलक्रीडा की थी

लोकजीवन की मोती - जोरावरसिंह जादव

गुजरात समाचार ता. २१-५-१६ रविवार की पूर्ति में से स्वीकार
(संग्राहक - पी.पी. स्वामी)

अहमदाबाद के दक्षिण दिशा में १५ कि.मी. के अन्तर पर दश्क्रोई तालुका का जेतलपुर गाँव राष्ट्रिय मार्ग ८ नवम्बर पर आया हुआ है। गाँव में प्रवेश करते ही स्वामिनारायण मंदिर की धर्मध्वजा फहरा रही है। पश्चिम दिशामें पुराना किला है । उसी से सटा हुआ देव सागर तालाब है। तालाब के किनारे दक्षिण तरफ छोटा महल तथा वाडी है। इस धरती पर पैर रखते ही जेतलपुर गाँव की प्राचीनता का ख्याल आजाता है। वह क्या बारोटो का लेख बताता है कि जेतलपुर गाँव की स्थापना ई.स. १३३९ में हुई है। देव सरोवर के पश्चिम तरफ थोड़ी दूर पर ईन्द्रोडिया नामका गाँव था, उस दिशा में गाढ जंगल था। जंगली जानवरो तथा चोर डाकूंओ की डर से वहाँ के लोग सुरक्षित नही थे। वर्तमान में जहाँ गाँव बसा है वहाँ पर जेतल नाम की रबारीन का निवास था। यहाँ पर लोग सुरक्षित मानते थे इसलिये पश्चिम इन्द्रोडिया गाँव की प्रजा यहाँ पर आकर वस गई। जेतल रबारिन के नाम से जेतलपुर गाँव का नाम पडा। जेतलपुर का पुराना नाम जतीलपुर हो सकता है। ''मिराते अहमदी'' पुस्तक में देव सागर तालाब के किनारे किला था नाम जतीलपुर का गढी ऐसा नाम था । अहमदाबाद को वसाने वाला अहमदशाह के वंशजो का राज्य इ.स. १५७३ तक था बाद में मोगल शहेनशाह अकबर गुजरात को जीत कर मोगल सल्तन में मिला दिया । अहमदाबाद को मुगल सल्तनत का माना गया । इतिहास विद् रत्नमणीराव ने लिखा है कि गुजरात का सूबा जहाँगीरने अपने पुत्र शाहजहाँ को देखने के लिये रखा । उसके नीचे सफीखान सूबा था । शाहजहाँ ने गद्दी प्राप्त करने के लिये जहाँगीर को बंदी बनाकर सफीखान जहाँगीर का

वफादार रहा । शाहजहाँ की सेना तथा सफीखान की सेना के बीच जेतलपुर के सीमा में इ.स. १६२३-१० जून को बड़ी लडाई हुई जिस में सफीखान विजई हुआ । इस विजय की याद में मुगल बादशाह जहाँगीरने सफीखान को सैफखां का पुरस्कार दिया । जिस का वेतन ७०० रुपये थे जिसे बढाकर तीन हजार कर दिया गया । इसके अलांवा ३००० घोडो के साथ सरदार बनाकर, गुजरात का मुख्य सूबेदार बना दिया ।

जेतलपुर की लडाई में जीत की याद में सैफखान ने जेतलपुर में तालाब के किनारे महल तथा सैफबाग नामका बगीचा बनाया । पीछे से उस बाग को जीत बाग अथवा जिन्नतबाग के नाम से जाना जाता था । सैफखांने देवसागर के किनारे जेतलपुर का किला बनाया । महल बनाया । यह किला तालाब की भव्यता में विस्तार करता है । किले के किनारे खांई बनाई गई है । किले में तोप से मारकरने की झरोखें है । यह सब इस समय जीर्ण हैं । यह सब इतिहास की गवाही देते हैं । साढे तीन सौ वर्ष पूर्व बनाये गये किले आज खंडहर की हालत में है । फिर भी उसके ऊपर का बूर्ज उसकी भव्यता को दर्शित करता है । इस पुराने किले में से महल में जाने के लिये भूगर्भ मार्ग आज भी मौजूद है । वह तालाब से ढंका हुआ है ।

जेतलपुर, खंभात, अहमदाबाद व्यापारी मार्ग पर आया हुआ है । जेतलपुर का किला बनाया गयाँ बाद में बारेजा थाना ध्यक्षका स्थान बनाया गया । मुगल समय में दश सवार तथा १५ पैदल सैनिक वहाँ रहते । अमदाबाद से निकलते समय जेतलपुर, बारेजा, खंभात व्यापारी मार्ग था । उस समय जेतलपुर में कपडे के ऊपर टेक्स लिया जाता था ।

इ.स. १७९६ में बाजीराव दूसरे पेशवा हुये, उन्होंने अपने प्रतिनिधिके रुप में कशनराव भीमराव शेलुकर की नियुक्ति करके सन १७९८ में अमदावाद भेंजे । शेलुकर अबाशेलकर नाम से प्रसिद्ध थे । ''गुजरात सर्व संग्रह'' में शेलुकर १८०७ तक अहमदावाद का सुबा था ऐसा स्पष्ट होता है । समय उसके परिवार को जेतलपुर देवसागर के किनारे जब कभी आना होता तो सैफ बाग में घूमना तथा रानी महल में निवास करता ऐसी किंवदन्ती है । इस महल से सटा हुआ एके बहुत बड़ा बाग था । बाग के किनारे कोट था । उस कोट में नव कूयें थे । उन सभी कुओं में पानी नहीं रहता था । यहाँ का तालाब, कूंआ, महल, बाग अहमदाबाद में मराठा शासन से पहले का माना जाता है ।

जेतलपुर के इस तालाब के किनारे बने किले में थानेदार तथा उनके ५०-७० जितने घुड सवार रहते थे । ये सभी सूबा के आदमी थे, किसानो से कर लेने का काम करते थे ।

देव सागर के किनारे दक्षिण भाग में बी.बी. का ढाल था, यहीं पर बहुत पुरानी कब्र थी, इसके पास ताडके २-३ वृक्ष थे । बीबी की ढाल से थोडी दूर पर एक बड़ा दरवाजा था । उसी मकान में नाकेदार रहता था । माल लेकर आने जाने वालों से कर लेता था । नाकेदार सूबा का आदमी था । उसकी मदद से सिपाही रहते थे । इन सभी को रहने की व्यवस्था की गई थी । उन्नसीवी सदी तक तीन निवास वर्तमान थे । जेतलपुर के देव सरोवर की कथा श्रीकृष्ण के समय से प्रचलित है । पांच हजार वर्ष पूर्व द्वारिका से वृंदावन जाते समय यादव कुल के अग्रणी बवलरामजी यहीं पर लंबे समय तक रुप कर विश्राम किये थे । इसी लिये इस सरोवर का नाम देव सरोवर हो गया । एक और भी किंवदन्ती है - कि ब्रह्माजी के आदेश से रैवत राजाने पुत्री रेवती का विवाह वलरामजी के साथ इसी देवसरोवर के किनारे करवाया था । इस विवह में तैंत्तीस कोटि देवता उपस्थित थे । इससे यह भूमि पावन हो गई थी । इस पावन देव सरोवर के किनारे अनेक ऋषि-मुनि सिद्धि प्राप्त किये थे । ऐसा कहा जाता है कि बलदेवजी इस सरोवर में अनेंकोवार जलक्रीडा किये थे । इस समय जलक्रीडा का दर्शन करने के लिये देव, गंधर्व, नारदादि

ऋषि आते थे।

देव सरवोर का संबन्धस्वामिनारायण संप्रदाय के साथ भी जुडा है । ऐसा कहा जाता है कि भगवान स्वामिनारायण वन विचरण करते समय वि.स. १८५५ में नीलकंठ वर्णी के रुप में देव सरोवर के किनारे बिराजमान थे। उसके बाद सहजानंद स्वामीने जेतलपुर की भूमि को अनेकबार पादयात्रियों से पवित्र बना दिये थे। जेतलपुर में श्रीजी संत-पार्षदों के साथ अनेकबार पधारते तब इस देव सरोवर में स्नान करते। महल के पास फूलवाडी में रुकते और सभा करते। श्रीहरि देव सरोवर में नित्य जलक्रीडा करते उस समय भक्त उनकी चंदन-पुष्प से पूजा करते। इस लिये यह देव सरोवर प्रसादी का कहा जाता है। ''श्रीहरि जेतलपुर में'' इस पुस्तक में इस तरह का वर्णन किया गया है''ग्रीष्मऋतु हती श्रीहरि एक दिवस स्नान करवा माटे समुद्र जेवा अगाधजल मां देव सरोवर स्नान करवा गया, कादव रहित निर्मल जलथी भरेला, खीलेला लाल कमलों वाला, जेना किनारे आवेला अनेक विधवृक्षो ऊपर पक्षियों कलरव करी रह्या हता । श्रीहरि सरोवरमां प्रवेश्या । राता कमल सरोरवा चरणोवाला श्रीहरि पडखा भेर तरता हता अने प्रेमपूर्वक भक्तजनों साथे जलक्रीडा करता हता। खूब हर्षोल्लासित थयेला गृहस्थो अने मुनियो वारंवार खोबा भरी श्रीहरिनी ऊपर जल उडाडता हता''। दोसो वर्ष पुरानी यह वात है।

इसमें जेतलपुर गाँव की भूमि को सहजानंद स्वामीने गोकुल जैसा बना दिया था । जेतलपुर का देवसागर तालाब, तालाब के किनारे अक्षरमहल, पवित्र वाडी यज्ञशाला, पवित्र छत्री जहाँ पर अनेकों यज्ञ हुए थे । इस वाडी में मौलश्री का वृक्ष है, अक्षर महल में वरामदा है जहाँ पर श्रीहरि बैठकर स्वमुख से वचनामृत का बोधदिये थे। इस देव सरोवर के किनारे इमली के वृक्ष है जहाँ पर झूले का आनंद लिये थे । इन सभी स्मरणों से ही यात्रालु यहाँ आकर दर्शन करते हैं तथा देव सरवोर में स्नान करते हैं।

देव सरोवर के किनारे महल के पूर्व दिशा में छत्री बनी हुई है। वहाँ बैठकर श्रीहरि नित्य दतुअन करते और देवसरोवर में स्नान करते । भाद्र शुक्ल एकादशी को स्वामिनारायण मंदिर से श्रीहरिकृष्ण महाराज का जलूस देव सागर में स्नान करने जाता है। सरोवर में नाव के सहारे बीच में लेजाकर हरिकृष्ण महाराज को स्नान कराया जाता है, बाद में पालकी में बैठाकर जेतलपुर गाँव में बाजे गाजे के साथ घुमाया जाता है। इस अवसर पर देव सरोवर के किनारे बहुत बड़ा मेला लगता है। इस मेले में हजारो लोग भगवान का दर्शन करने के लिये उमड पड़ते हैं। भगवान को देवसरोवर में स्नान के समय पांच-पन्द्रह मन ककड़ी का प्रसाद बांटा जाता है। इस तरह देव सरोवर का संबन्धउत्सवों के साथ जुडा हुआ है । अपना भी इन सरोवरो के साथ सांस्कृतिक संबन्धजुडा हुआ है। इस समय देव सरोवर इरिगेशन के हाथ में है। यह सरोवर अब सदा नर्मदा के जल से भरा रहता है। औडा इसका विकास करना चाहता है। सूरत तथा भरुच के तालाब की तरह पवित्र देव सरोवर को भी निर्मित कर दिया जायेगा, तब सरोवर सत्संगियों के लिये नारायण सरोवर की तरह बन जायेगा।

નીચેના મહામંદિરોમાં નિત્ય દર્શન માટે

જેતલપુર : www.jetalpurdarshan.com
મહેસાણા : www.mahesanadarshan.org
છપૈયા : www.chhapaiya.com
ટોરડા : www.gopallalji.com
નારણઘાટ : www.narayanghat.com
વડનગર : www.swaminarayanmandirvadnagar.com
પ્રયાગ : www.prayagmilan.org
અયોધ્યા : www.ayodhyaswaminarayanmandir.com
ઈડર : www.gopinathjiidar.com
નારણપુરા : www.sankalpmurti.org

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

वर्तमान में ही १८ मई के दिन अन्तर राष्ट्रीय म्युजियम का उत्सव मनाया गया । दुनिया भर में उस दिन म्युजियम से संबन्धित कार्यक्रम किये गये । अहमदाबाद में भी ''म्युजियम आफ अमदावाद'' कार्यक्रम के अन्तर्गत गुजरात विद्यापीठ में एक कार्यक्रम किया गया । अहमदाबाद में कुल २४ म्युजियम हैं । यह वात वहाँ जाने पर ख्याल आया । प्रत्येक म्युजियम के प्रतिनिधिने अपने म्युजियम की विशिष्टता का निरुपण किया कि दूसरे पर्यटक स्थलों की तरह म्युजियम को देखने की चाहना नहीं है । इसके लिये क्या करना चाहिये ? तो म्युजियम के ब्रोसर बनाकर टुरिजम विभाग में देकर पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है । अहमदाबाद के प्रत्येक म्युजियम में आने वाले पर्यटकों की संख्या देखने से लगा कि अपने श्री स्वामिनारायण म्युजियम में आने वाले पर्यटकों की संख्या अधिक थी । इसके अलांवा पांच वर्ष में अपने म्युजियम में छ लाख जितने दर्शनार्थी आ चुके हैं । एयपोर्ट जाते समय सरदार वल्लभभाई पटेल का म्युजियम आता है, वहाँ के प्रतिनिधिद्वारा ख्याल आया कि वह सरकार द्वारा चलाया जाता है इसलिये पैसों की कोई समस्या नहीं है । वे लोग म्युजियम में आने वाले लोगों के लिये खूब प्रचार-प्रसार किये फिर भी आनेवालों की संख्या बढती नहीं है । जब कि अपने म्युजियम में विना किसी प्रचार-प्रसार के उत्तरोत्तर संख्या बढती जा रही है । पू. बड़े महाराजश्री का आग्रह था कि विना प्रचार के ही लोगों से प्रचार होगा और लोग स्वंय आयेंगे । ऐसा ही हुआ । इतनी संख्या आती रहीं कि म्युजियम में काम करने वाले कर्मचारियों को कभी उदासीनता नहीं हुई ।

वर्तमान में विद्यालयों में अवकाश का समय चल रहा है, इस लिये ९ नंबर के हाल में कीयोस्क के ऊपर अपने संप्रदाय का विशेष ज्ञान मिल सके इसके लिये गेइम रखी गई है, बालकों को इसका खूब लाभ मिल रहा है । इसलिये बालक अपने अभिभाव कों से म्युजियम में आनेका आग्रह करते हैं ।

अपने म्युजियम में शुद्ध-स्वादिष्ट भोजन तो मिलता ही था, अब ब्रेड-बडापाऊँ, दाबेली, पीजा, फरसान इत्यादि नास्ते की भी व्यवस्था म्युजियम के दरवाजे पर की गई है । जो सत्संगी बाजार का नास्ता नहीं करते उनके लिये यह व्यवस्था आशीर्वाद रुप में होगी ।

– प्रफुल खरसाणी

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें ।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा । नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि मई-२०१६

रु। ११,१११/- महेन्द्रभाई आर. पटेल - अमदावाद ह. बकुला एम. पटेल - बड़े महाराजश्री के ७३ वें प्राकट्योत्सव प्रसंग पर।

रु। ५१,०००/- श्री स्वामिनारायण मंदिर, गोधरा (कच्छ-मांडवी) यज्ञ निमित्ते भेट हा. मांडवी मंदिरना के उ. महंत, सां.यो. कानबाई फई शिष्य

रु। ३१,०००/- जगदीशभाई के दरजी (सादरावाले) बोपल

रु। २५,०००/- गोसलीया परिवार - न्युयोर्क

रु। २१,१११/- अ.नि. गोविंदभाई धरमदास डांगरवा ह. मगनभाई, मंगळभाई एवं घनश्याम, आशिष, दर्शन

रु। १२,०००/- श्री स्वामिनारायण मंदिर भारासर-कच्छ-भुज

रु। ११,०००/- रामदेवजी वेकरीया एवं कुरजी देवराज वेकरीया - कच्छ-भुज

रु। ११,०००/- धीरजभाई के. पटेल - सायन्स सीटी

रु। ११,०००/- श्री स्वामिनारायण विश्वमंगल गुरुकुल - कलोल बड़े महाराजश्री के ७३ वें प्राकट्योत्सव प्रसंग पर।

रु। ११,०००/- ईन्दीराबहन विनोदभाई पटेल - शांतीपुराकंपा

रु। ५,२११/- भरतसिंह बालुभा झाला समला - सुरेन्द्रनगर, हा. चांदखेडा

रु। ५,००१/- मंजुलाबहन देवचंदभाई डोबरीया - हिरावाडी

रु। ५,०००/- कंचनबहन कांतिलाल ठक्कर - सेटेलाइट

रु। ५,०००/- मीनाबहन के. जोषी - बोपल

रु। ५,०००/- डॉ. धर्मेन्द्रभाई धीरुभाई भावसार - महेसाणा

रु। ५,०००/- विष्णुप्रसाद मगनलाल ठाकर-गोता

रु। ५,०००/- पटेल दिपेश रसिकभाई (श्रीजी प्रसन्नार्थे) नारणपुरा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (मई-२०१६)

ता. ०७-०५-२०१६	प्रविणभाई भूलाभाई पटेल - घाटलोडीया
१०-०५-२०१६	अमरबा अगरसंगभा झाला-बळोल (भाल)
१५-०५-२०१६	विजयभाई एवं शनीभाई (मोखासणवाला) बोस्टन
१९-०५-२०१६	अ.नि. ईश्वरभाई गिरधरभाई पटेल के पुण्यतिथि के निमित्त ह. हरिप्रसादभाई ईश्वरभाई पटेल-खेरोल (यु.एस.ए.)
२१-०५-२०१६	जयेश धनजी हिराणी - लंडन ह. धनजीभाई रवजीभाई हिराणी एवं पायल एवं वनिताबहन
२२-०५-२०१६	अश्विनभाई एवं भरतभाई मगनभाई जागाणी-सेटेलाईट ह. चार्वीबहन
२४-०५-२०१६	गुणवंतभाई आर. सोलंकी - नरोडा डॉ. प्रियांक के जन्म दिन निमित्त
२७-०५-२०१६	रामभाई सोमदास पटेल - मोखासण चि. रीमाना जन्म दिवस निमित्त - ह. देवेन्द्र

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग आलेखावलिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

शरणागत के लिये सोना का रथ

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

एकवार जीव ईश्वर की शरण में चला जाय तो भगवान उसकी रक्षा करते हैं । लेकिन शरणागति पूरे भाव से होनी चाहिए। भगवान बहुत दयालु हैं। भगवान अपने भक्त की स्वयं चिंता करते हैं। दुःख दूर कर देते हैं। भगवान ने कैसी कृपा की है अपने भक्तों के ऊपर–यहाँ एक दृष्टांत प्रस्तुत करते हैं –

गर्मी का समय था, ग्रीष्म तप रहा था, पृथ्वी तप रही थी, ऐसी धूप तप रही थी कि उसी समय में एक गरीब मनुष्य जिस की शरीर पर एक कपडा भी नहीं था, पैर में पाद त्राण भी नहीं था, मस्तक पर आधे मन का पोटला रखकर चला जा रहा था।

आधा मन का मतलब चलने में भी परेशानी, जैसे तैसे चल रहा था । पीछे से उसी रास्ते से सोने का रथ आया । उस सोने के रथ पर राजा बैठे थे । उस गरीब आदमी की ऐसी हालत देखकर राजा को दया आ गई, रथ को रोकवाकर राजाने पूछा कहाँ जाना है ? आगे जाने का नाम लिया । अच्छा, बैठजा । यह रथ वहीं जा रहा है। वह आदमी उस रथ पर तो बैठ गया, रथ देखा तो उसका मुह खुला का खुला ही रह गया । ऐसे सोने के रथ पर बैठने को मिला, इसमें चमत्कार कहाँ हुआ खबर है ? सोने के रथ पर बैठे तो सही लेकिन आधा मन भारवाले पोटले को अपने माथे पर रखे ही रहे। राजाने कहा कि इस पोटले को रथ पर रख दो । रथ में बैठने के बाद पोटले को माथे पर रखने की जरुरत नहीं । उसने कहा कि आप अपने इस सोने के रथ पर बैठाये यह कम नहीं है, मैं इस पोटली को रथ पर नही रखूंगा । अरे भाई आपके माथा का वजन भी रथ के ऊपर ही आ रहा है न ? आप अपने पोटले को रथ पर रख दीजिये । आपेक पोटली को कोई खोलेगा नहीं । कोई ले जायेगा नहीं । इतना कहने पर भी पोटली माथे से उतारी नहीं । यह कथा किसकी ? इस संसार में भटकते अज्ञानी जीवात्माओं की है । दुःख तथा त्रास के त्रिधिधताप में यह जीवात्मा, चलता जा रहा है । उसके पास कोई साधन नहीं है। योग, तप, सत्संग इत्यादि उसके पास न होने से ही वह दुःखी है। दुर्बल है। इसके अलांवा कर्म के पोटले को बांधकर माथे पर रखकर चल रहा है। उस समय अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति परमात्मा ऐसे अज्ञानी जीव को अपनी शरण में लेने के लिये सोने का रथ लेकर आते हैं । जीवात्माओं को अक्षरधाम तक ले जाने के लिये लिफ्ट देते हैं। तूं मेरी शरण में आजा, तुझे अपने रथ पर बैठाकर पार कर दूंगा तुझे चलने की जरुरत भी नहीं । तुझे अन्य कोई प्रयत्न करने की जरुरत नहीं है। फिर भी जगत के कर्म बन्धन से बंधा हुआ जीव शरणागति न होकर अपने कर्म के पोटले को मांथे पर रखकर चलता रहा है । अपनी चिंता को छोड़ता नहीं है।

स्वामिनारायण भगवान अपने इष्टदेव ने जब इस संप्रदाय की धर्मधुरा को धारण की तब रारामानंद स्वामी से बरदान मांगा कि ''जो जीव मेरा भक्त होगा उसका सभी प्रारंब्धमें आनेवाले जो भी दुःख होंगे वह मैं भोगूं और भक्त सुखी हो। स्वयं भगवान जब अपने भक्त के प्रारब्धको अपने माथे पर लेने के लिये तैयार हो, फिर भी जीव दुःख के पोटले को ढोता है।

जब हम सच्चे अर्थ में अपनी पोटली को भगवान को सौंप देंगे तो ही शरणागत कहे जायेंगे । अनन्य आश्रित कहे जायेंगे।

पेईज नं. २०

श्री स्वामिनारायण

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली "परमात्मा की प्राप्ति के लिये निर्दोष बालक बन जाना चाहिए"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

इस जगत में सभी सुख की खोज में हैं। किस प्रकार के सुख की ? इन्द्रियो के सुख के लिये सभी दौडते हैं, इस संसार में जगत का चाहे जितना सुख मिल जाय फिर भी तृप्त नहीं होते, इसका कारण क्या है ? इसका कारण यह है कि हमें जो सुख चाहिये उसकी तरफ गति ही नहीं किये हैं। यदि थोड़ी भी गति किये हैं तो कुछ आनंद अवश्य मिलेगा। यदि आनंद मिला होगा तो वहीं सुख है, उसी में शांति है। वह है परमात्मा की तरफ गति करना, प्रयत्न करना। हम इस जगत में आकर भटक गये हैं, हमें क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिये इसका ज्ञान नहीं रहा। इस ज्ञान के होने पर ही जगत का भवजंजाल दूर होगा। यह तभी संभव है जब सत्संग करेंगे।

जिस तरह बाजार में खरीदने के लिये गये, वहाँ २-३ घन्टे समय बिगाड दिये लेकिन मन के अनुकूल वस्तु नहीं मिली महंगी से महंगी वस्तु देखने पर भी मन को तृप्ति नहीं मिली, समय भी बिगडा और उचित वस्तु भी नहीं मिली।

इसी तरह परमात्मा को प्राप्त करने के लिये खूब इधर-उधर भटके लेकिन भटकने से परमात्मा तो मिलते नहीं है और सुख शांति भी नहीं मिलती। उसका कारण यह है कि हम माया के जाल में इतना फंस गये है कि हमे यथार्थ मार्ग दिखाई ही नहीं देता। बजार में बारंवार जाते है फिर भी योग्य वस्तु नहीं मिलती और थक कर समयविता कर घर वापस आजाते हैं, ठीक इसी तरह भगवान की तरफ आते है और इधर उधर भटकने से योग्य स्थान प्राप्त न होने के कारण घर लौट जाते हैं। महाराज कहते कि इस भरत खंड में एक ही बार जन्म होता है वारंवार नही होता, इस लिये सचेष्ट होकर एक निष्ठा, एक भक्ति, एक परमात्म परायण होकर सत्संग के माध्यम से आत्मशांति प्राप्ति की जा सकती है।

इस संसार में दो तत्व है - एक परमात्मा दूसरी माया। माया परमात्मा की शक्ति है। माया के माध्यम से सुख प्राप्त होता है लेकिन वह शाश्वत सुख नहीं है। शाश्वत सुख परमात्मा की शरण में है। देवता लोग भी स्वार्थी होते है। ऋषि-मुनिजब तप करते हैं तो देवताओं के मन में होता है कि यह मेरा सिंहासन लेलेगा। सभी जगहों पर राग-द्वेष-ईर्ष्या है, स्वार्थ है। इसके सिवाय मात्र परमात्मा में यह सब कुछ नही है। इसलिये जिसे शाश्वत शांति की इच्छा हो वह परमात्मा की शरणागति स्वीकार करले। परमात्मा को प्राप्त करने का प्रयत्न करे। परमात्मा से किस तरह सुख-शांति मांगे ? इसका उदाहरण - जिस तरह बालक बोल चाल नहीं सकता, इसारा भी नहीं समझता उसे भूख-प्यास लगी हो तो कैसे मांगे। अब वह रोता है लेकिन उस में कोई स्वार्थ का भाव नही होता, निर्दोष भाव से बालक रोता है, और इस भाव को मां समझती है। ठीक इसी तरह निर्दोष भाव से होकर जो भी भगवान की पुकार करेगा, उनको भावपूर्वक याद करेगा, उनके सामने रोयेगा तो निश्चित ही मां की तरह वे आपके पास आयेगे।

लेकिन आपके हृदय में पवित्र भाव होना चाहिये, तभी आप करुण हृदय से प्रभु को याद करके या आत्म समर्पित भाव से रोते नहीं है बल्कि आपका हृदय उस परमात्मा को पाने के लिये उत्कंठित हो उठता है। संसार में जो लोग रोते है वह स्वार्थ के लिये, कोई कही बाहर जा रहा हो या कोई दुःख या सुखद घटना हो गई हो तो रोते है। यहाँ परमात्मा के लिये यह सब वात लागू नही पडती क्योंकि यह सभी स्वार्थ प्रेरित है। इसे करुणार्द हृदय नही कहेंगे।

एक शेठ था वह प्रति महीने ५० रुपये दान देता था। एक बार उसकी बेटी का विवाह प्रसंग था, उस प्रसंग पर उसने २० रुपये ही दिये, चार-पांच गरीब मिलकर

झघड़ा किये कि इस महीने क्यों कम दिये। इसी तरह हम भी प्रभु से झगडा करते हैं कि कम क्यों दिये। यह नही सोचते की योग्यता से अधिक मिला है जीवन में सभी से अच्छा-बुरा होता रहता है। आपसे बुरा हो गया तो परमात्मा तक आप नहीं पहुच सकते ऐसी वात नहीं, भूल तो सभी से होती है, भगवान की जो शरणागति होते है, भगवान उनकी सभी भूल को भूलकर स्वीकार कर लेते है।

इसी लिये भगवान को पतित पावन, करुणानिधि, अधम उधारक कहा गया है। भगवान में प्रीति रहेगी तो अपने सानिध्य का सुख अवश्य प्रदान करेंगे। मेरे भगवान, मेरे भगवान की पुकार करते रहेंगे तो निश्चित ही एक दिन अवश्य आयेंगे और आत्मसात करलेंगे, हमें मात्र निर्मल मनवाले बालक का स्वभाव करने की आवश्यकता है। तो निश्चित परमात्मा आयेंगे।

●

एक लक्ष्य प्रसन्नता का

- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

जब भी श्रीहरि प्रसन्न होगे तभी दर्शन देंगे। इसलिये भगवान को प्रसन्न करना चाहिये। श्रीजी महाराजने गढडा मध्य के २८ वे वचनामृतम में कहा है कि "जेने भगवानने भगवानना भक्तनो संग छे ने भगवाननो राजीपो छे। ने ते जो मृत्यु लोक में छे तो पण भगवानना अक्षरधाममां जछे। ने तो भगवानने समीपे जइने निवास करसे। अने जेनुं रुंडु थाय छे ते पण भगवान तेमना ज अपर स्वरुप एवा धर्मवंशी आचार्यश्रीने संतना राजीपाथी ज थाय छे। गढडा मध्य के ४५ वें वचनामृत में भी कहें हैं कि भगवानने भगवानना भक्त राजी थाय एवुं कर्म करे तो आने आदे हे परमपद जेवुं सुख भोगवे छे। अने तेने मे नरकमां जवानुं प्रारब्धहोय तो पण ते भुंडा कर्म नो नाश थईजाय छे। माटे जे समझु होय, तेणे तो भगवानने भगवानना भक्त राजी थाय एमज वर्तवुं। इस तरह प्रसन्नता की महत्ता बताई है। भगवान का तथा भगवान के संत की प्रसन्नता है यही अपने लिये सच्चाधन है। अपनी भावना शुद्ध हो तो भगावन अवश्य प्रसन्न होते हैं। भगवान या संत जब आज्ञा करते है तब अपना अहंतत्व छोड़कर सुख-दुःख का विचार विना किये सेवा करे तो संत-आचार्य-भगवान सभी की कृपा होती है। प्रसन्नता अपने ऊपर कैसे हो ? इसके लिये -सेवा-महापूजा, दंडवत्, प्रदक्षिणा, कीर्तन, माला फेरना इत्यादि करना चाहिए। मंदिर में झाडू पोता करना, उत्सव में भोजन इत्यादि की व्यवस्था में रहना, भोजन परोसने में, वासन मांजने में सेवा का भाव रखना चाहिए। इस तरह की क्रिया में भाव होना आवश्यक है। नंद-संत भी महाराज को प्रसन्न रखने के लिये सेवा करते हैं।

स.गु. गुणातीतानंद स्वामी एकवार महाराज के साथ कारियाणी गये थे। उस समय एक साथ १८ संत विमार हो गये। उसी सयम महाराज को वडताल जाना पड़ा। उस समय महाराजने सभा में संतो से पूछा कि हे संतो ? हमें वडताल उत्सव में जाना है और यहाँ संतो की सेवा में कौन रहेगा ? यदि कोई बिमार संतो की सेवा में रहेगा तो उसे १०० उत्सव का फल दूंगा। उस समय श्रीहरि की कृपाकांक्षी स.गु. गुणातीतानंद स्वामी सभा में खड़े हो गये और बोले हे महाराज ? में सेवा में रहूंगा। सभी संतो को शौच हो रही थी, पेट बिगड़ा हुआ था। यह सेवा बड़ी कठीन थी। लेकिन श्रद्धालु तता श्रीहरि को प्रसन्न करने में तत्पर गुणातीतानंद स्वामीने संतो की ऐसी सेवा की कि वे थोडे दिन में ही ठीक हो गये। अभी वडताल का उत्सव पूरा नहीं हुआ है इस लिये संत कहने लगे कि स्वामी ? अब हम ठीक हो गये हैं, अब वडताल के उत्सव में जाइये और हम लोगों की तरफ से महाराज को भेंटियेगा। इसके बाद स्वामी वडताल पधारे। वडताल में महाराज को स्वामी के आने का समाचार मिलते ही महाराज सभा में खड़े हो कर स्वामी को १८-१८ बार भेंटे। यह प्रभु की प्रसन्नता का फल है। जब कोई भी भगवान का होकर रहेगा तो भगवान उसे इच्छित फल तो देंगे, उसके अलांवा अपनी तरफ से योग-क्षेम देंगे।

भगवान की प्रसन्नता हमारे ऊपर क्यों नहीं होगी ? इस पांच प्रकार के तत्व में से एक भी बाधक होते हैं तो प्रसन्नता नहीं मिलती। (१) अहम् (२) ममत्व (३)

स्वभाव (४) आसक्ति (५) द्वेष । भगवान, संत-भक्त कोई भी जो कार्य सौंपे उसे स्वीकार करके किया जाय तो भगवान की प्रसन्नता अवश्य मिलेगी । सुख-शांति भी मिलेगी ।

सेवा का फल प्रसन्नता है । जब प्रसन्नता प्राप्ति के लिये सेवा करें तो वह अखंड वृत्ति कही जायेगी । अपनी बड़ी भाग्य मान कर सेवा करनी चाहिये । यद्यपि सेवा कर्म कठिन है, तथापि भगवान की कृपा के लिये सेवा की जय और उसमें भी छल-कपट का भाव छोडकर किया जाय तो निश्चित ही ईश्वर की कृपा मिलेगी । भगवान को प्राप्त करने के लिये तथा उनकी प्रसन्नता प्राप्ति के लिये साधन तो करना ही होगा । साधन के लिये साधना की जरुरत होती है । साधना एक निष्ठ भाव से की जाती है । यदि इस तरह सेवा की गई तो निश्चित ही प्रभु की कृपा मिलेगी, इसमें संदेह नहीं है ।

अनु. पेईज नं. १७ से आगे

नि:स्वार्थ भक्ति चाहिये

- नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

मनुष्य की ऐसी प्रकृति हो गई है कि जहाँ पर स्वार्थ सिद्ध होता है वहीं पर जाता है, वैसा ही करता है । दूसरे कार्य तो ठीक भगवान की भक्ति भी अपेक्षा के विना नही करते । इस लिये उत्तम फल की प्राप्ति नही होती ।

मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह जहाँ जाता है अपना स्वभाव लेकर जाता है । मंदिर में आता है तो भगवान से कितनी सारी मांगे करता है । मंदिर के बाहर फटे पुराने कपड़े वालो की लाईन होती है, जब कि मंदिर में अच्छे कपड़े वालो की लाइन होती है ।

महाराज परीक्षित मान-सन्मान की अपेक्षा से समिक ऋषि के आश्रम में गये लेकिन समिकऋषि समाधी में थे, जिससे राजा का सन्मान नहीं हो सका । परिणाम स्वरुप उस पवित्र राजा को भी क्रोधआया और मरे हुये सर्प को गले में डाल दिया । पिता का अपमान जो सहन न करे उसे पुत्र कहा जाता है । गुरुका अपमान न सहन करने वाला शिष्य कहलाता है । जो सहन करले उसे न पुत्र नहीं शिष्य कहा जायेगा । अपने पिता और गुरु ऐसे समिकऋषिका अपमान पुत्र श्रृंगी से सहन नहीं हुआ और श्राप दे दिये जिससे राजा परिक्षित का बहुत बड़ा नुकशान हुआ । अपेक्षा क्या नहीं कराती ?

एक स्वार्थी भगत प्रतिदिन एक घन्टे पूजा करता । शरीर पूजा में रहती लेकिन मन पूजा में नहीं रहता । एक तरफ पूजा करता जाता दूसरी तरफ व्यवहार का भी काम करता रहता । इस तरह करते वीस वर्ष हो गये ।

एक दिन की वात है, वह भगत पूजा में बैठा था । श्राद्धपक्ष चल रहा था पत्नी खीर बनाई थी । खीर को ठन्ढा करने के लिये जहाँ भगत पूजा कर रहा था वही पर रखी थी । वह भाई पूजा करता जाय खीर पर ध्यान रखते जाय । थोडा सयम हो गया खीर की सुगंधसे आकर्षित होकर कुत्ता घर में आ गया । भगत कुत्ते को हट-हट कता रहा लेकिन कुत्ता आगे बढता रहा, उधर भगत को पूजा में से उठना नहीं था इसलिये जब देखा कि अब खीर में अपना मुख कुत्ता डालने वाला है तो शालिग्राम की मूर्ति उठाकर कुत्ते के मुख पद दे मारी, कुत्ता भाग गया । अब उस भाई को शांति मिली, कहने लगा कि जिस शालिग्राम की २० वर्ष से पूजा करता रहा वह आज काम में आ गया । भगवान शालिग्राम का उपयोग पत्थर के रुप में कुत्ते को भगाने के लिये किया ।

कहने का मतलब यह है कि स्वार्थ में मानव अपने को भूल जाता है । भक्ति तो करता है लेकिन भगवान से मांगता ही रहता है । भगवान भी ऐसे भगत के छल में नही आते । जो भक्त नि:स्वार्थ भाव से भक्ति करते है उनके ऊपर भगवान की कृपा होती है । जो मांगता है उसे मुठ्ठी भर मिलता है, जो नहीं मांगते उनका भगवान ध्यान रखते हैं । लेकिन इतना अवश्य ध्यान रखना कि अपना अमूल्य भजन-भक्ति रुपी धन कुत्ते के भगाने में खर्च न हो जाय ? भगवान की भक्ति निर्विघ्न की जाती है लेकिन ऐसी इच्छा वाले व्यक्ति को मंदिर के बाहर ही जब अपना पादत्राण उतारते हैं तो उसके साथ ही मान-सन्मान तथा स्वार्थ को भी उतारकर आना चाहिए । इस प्रकार का ध्यान रखा जाय तो निश्चित ही भगवान की कृपा मिलेगी।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव का चंदन चर्चित दर्शन

''श्री खंडम् चंदनम् दिव्यम्'' हे परम कृपालु परमात्मा लक्ष्मी के अंशुप दिव्य चंदन से आपकी पूजा अर्चना करता हूं । उसे स्वीकार करे ।

परम कृपालु सर्व अवतार के अवतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान के स्वस्वरुप श्री नरनारायणदेव को अपने हाथों में लेकर उनकी स्थापना करके समग्र आश्रितों के इस लोक तथा परलोक में सुख के लिए वचन बद्ध हुए थे । ऐसे महाप्रतापी श्री नरनारायणदेव आदि देवों के वैशाख शुक्ल पक्ष-३ तीज से प्रत्येक दिवस चंदन के अलौकिक वस्त्रों के दर्शन करवाये जाते है । हजारो हरिभक्तगण रोज चंदन के वस्त्रों के दर्शन करके दिव्य अनुभूति की प्राप्ति करते हैं । ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी तथा उनके शिष्य मंडल द्वारा भगवान को प्रसन्न करने हेतु नियमित रुप से अलौकिक सुंदर-चंदन के वस्त्रों से भगवान को सुशोभित किया जाता है । हरिभक्तगण भी यजमान बनकर इस अवसर का सुंदर लाभ ले रहे है।

(शा.स्वा. नारायणमुनिदास)

श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के अलौकिक सानिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री तथा समस्त बहनों की गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्री के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी के मार्गदर्शन में राजकोट महिला मंडल के यजमान पद पर ता. २७-५-१६ से २-६-१२ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण स.गु. शा.स्वा. वासुदेवचरणदासजी (नाथद्वारा) के सुमधुर संगीत में संपन्न हुआ । संहितापाठ के वक्ता स्वा. छपैयाप्रसाददासजी थे । प्रसादी के इस दिव्य सभा मंडप में तथा गादीवालाजी की हवेली में बहनों ने कथा श्रवण करके धन्यता का अनुभव किया । गरमी के समय में श्रोता एकचित से श्रवण करें इसलिये एअरकूलर तथा ठन्ढा पानी की व्यवस्था की गई थी । नित्य रसोई की व्यवस्था ठाकोरजी को तथा संत-पार्षदो के लिये की गई थी ।

प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे, उस दिन उन्होंने प्रसन्न होकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । हवेली में भी प.पू. अ.सौ. गादीवालाजी तथा प.पू. बड़ी गादीवालाजी कथा श्रवण करने पधारती थी । सभी महिला मंडल को प्रसन्न होकर हार्दिक आशीर्वाद दी थी । को.शा.नारायणमुनिदासजी ने सभा संचालन किया था । अनेक स्थानो से संतवृन्द पधारे थे । (शा.स्वा. नारायणणुनिदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर देवपुरा (खारवरिया) १०३ वां वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से देवपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान श्री स्वामिनारायण भगवान का १०३ वां वार्षिक पाटोत्सव ता. २९-४-१६ को धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर अहमदाबाद कालुपुर से स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी स.गु. रघुवीर स्वामी (शोकली) शा.पी.पी. स्वामी (गांधीनगर), शा. आनंदजीवनदासजी, श्रीजी स्वामी (शोकली) इत्यादि संत पधारकर ठाकुरजी की आरती उतारकर सभी को अलौकिक लाभ दिये थे । पाटोत्सव के यजमान रवजीभाई डुंगरभाई पटेल, अन्नकूट के यजमान दिनेशभाई प्राणबाई पटेल तथा प्रसाद के अनेरु भावक यजमान बनकर लाभ लिये थे । आगामी १०४ वाँ पाटोत्सव के यजमान भी उद्धाषित किये गये थे । इस प्रसंग में अमदावाद के प.भ. वासुदेवभाई, प्रो. झवेरभाई इत्यादि भक्त सेवा में सहभागी बने थे । गाँव के सभी भक्तों की सेवा प्रेरणारुप थी ।(कोठारी चंद्रकांतभाई)

हर्षद कोलोनी (बापूनगर) मंदिर में पाटोत्सव के उपलक्ष्य में कीर्तन सन्ध्या

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी बापूनगर पाटोत्सव के उपलक्ष्य में सुन्दर कीर्तन संध्या का आयोजन ८-५-१६ रविवार को रात्रि में ८-३० से ११-३० तक किया गया था । जिस में गायक संत शा.रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) स्वामी हरिजीवनदासजी, बलदेव स्वामी, शा. दिव्यप्रकाशदासजी (नारायणघाट), ब्र. स्वा. मुकुन्दानन्दजी, शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर), सुव्रत स्वामी, व्रजवल्लभ स्वामी इत्यादि संत-नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन गाकर सर्वोपरि श्रीहरि को प्रसन्न किये थे । इस प्रसंग पर कालुपुर मंदिर से पू. महंत स्वामी, एप्रोच मंदिर के महंत स्वामी,

नारायणघाट से देव स्वामी इत्यादि संत पधारकर आशीर्वाद प्रदान किये थे।

प.भ. दासभाई (स्वा. म्युजियम के व्यवस्थापक)ने सुंदर आयोजन किया था, जिस में स.गु. स्वा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर के महंत ने सहयोग किया था।

(अनिल पटेल श्री न.ना.देव युवक मंडल)

मोटेरा गाँव से श्री स्वामिनारायण म्युजियम पद यात्रा

मोटेरा गाँव से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सुंदर आयौजन से ता. १५-५-१६ रविवार को बालकों को ग्रीष्मावकाश का सुंदर लाभ मिला इस हेतु से ५० जितने बालकों को मोटेरा गाँव से श्री स्वामिनारायण म्युजियम की पदयात्रा रखी गई थी। जाहँ पर प्रसादी की वस्तुओं का तथा श्री नरनारायणदेव एवं प.पू. बड़े महाजश्री का दर्शन करके खूब धन्यता का अनुभव किये। पदयात्रा मे मोटेरा मंदिर के कोठारी महेन्द्रभाई तथा अंबालालभाईने पानी ईत्यादि की सुंदर व्यवस्था की थी। पदयात्रियों के साथ गांधीनगर के महंत पी.पी. स्वामी भी थे।

(हर्षदभाई पटेल - श्री न.ना.देव युवक मंडल)

रायसण (गांधीनगर) गाँव में भव्य सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से गांधीनगर रायसण गाँव में ता. १४-५-१६ शनिवार रात्रि ८-३० से ११-०० बजे तक जाह्नवी फार्म पी.डी.पी.यु. रोड में प.भ. जीतुभाई (मामा) लवारपुरवाला के यजमान पद पर श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल का आयोजन किया गया था। जिस में श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सहयोग से भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में शा. दिव्यप्रकाशदासजी, पूरव पटेल, शा. चैतन्य स्वामी हरिप्रिय स्वामी, कुंज विहारी स्वामीने कीर्तन-भजन कथा का सुंदर लाभ दिया था। इस प्रसंग पर कालुपुर मंदिर के मंहत स्वामी संत मंडल के साथ पधारकर आशीर्वाद का लाभ दिये थे।

सभा संचालन छोटे पी.पी. स्वामीने किया था । रायसण गाँव के सभी भक्त कथा भजन का सुंदर लाभ लिये थे। (गुंजन पटेल युवक मंडल)

मेघाणीनगर स्वामिनारायण सत्संग समाज आयोजित पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा गांधीनगर मंदिर से-२) के महंत पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर मेघाणीनगर के वार्षिक पाटोत्सव के उपलक्ष्य में सत्संग समाज आयोजित ता. १७-५-१६ से १९-५-१६ तक रात्रि में ८-३० से ११-३० तक श्रीमद् भागवत कथा स्वा. चैतन्यस्वरुपदाजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई।

यहाँ के श्रीहरिकृष्ण महाराज का अभिषेक किया गया था। बाद में भगवान को भव्य अन्नकूट का भोग लगाया गया था। अन्नकूट की आरती पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी ने की थी। अनेकों भक्त इसका सुंदर लाभ लिये थे।

(कोठारीश्री मेघाणीनगर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर खेरोल पुनः प्रतिष्ठा महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट) तथा छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर खेरोल का १५६ वर्ष पूर्ण होने से संत-हरिभक्तों के सहयोग से मंदिर में बिराजमान देवों की पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा ता. २२-५-१६ रविवार से ता. २६-५-१६ तक धूमधाम से की गई।

इस अवसर पर पंच दिनात्मक रात्रीय श्रीमद् भागवत पारायण स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्ता पद पर सम्पन्न हुई। कथा के अन्तर्गत-पोथीयात्रा, प्रतिष्ठा, यज्ञ, जलयात्रा, धर्मकुल पदार्पण, संतो की प्रेरक अमृत वाणी का सुंदर लाभ लिया गया था। गाँव के सभी भक्त छोटी-बड़ी सेवा करके धन्यभागी बने थे। ता. २६-५-१६ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। जिन के वरद् हाथों से पुनः मूर्तियो की प्राण प्रतिष्ठा की गई थी।

कथा की पूर्णाहुति करके सभा में पधारे थे। समस्त हरिभक्तों को हार्दिक आशीर्वाद प्रदान किये थे। अनेक स्थानो से संत पधारे थे। बहनो को दर्शन का लाभ देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी। सभा संचालन शा. कुंजविहारीदासजीने किया था । अलौकिक देवदर्शन धर्मकुल दर्शन, तथा कथा का श्रवण करके भक्तजन धन्य हो गये थे। (कोठारीश्री खेरोल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) देवों का चंदन चर्चित दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से गांधीनगर से-२ मंदिर में विराजमान सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव तथा श्रीहरिकृष्णदेव आदि देवो का वैशाख शुक्ल-३ से संत हरिभक्त स्वंय चंदन धिसकर ठाकुरजी को चन्दन चर्चित किये, जिस स्वरुप का सभी को दर्शन का लाभ

मिला । इस सेवा में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, तथा संतो में व्रजवल्लभदासजी, सिद्धेस्वर स्वामी, शा. दिव्यप्रकाशदासजी जुडे थे ।

यहाँ के हरिभक्त चन्दन चर्चित देवों का दर्शन करके धन्य भागी हुये । (को.श्री गांधीनगर से-२ मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति पार्क १८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. पी.पी. स्वामी गांधीनगर से-२ महंतश्रीकी प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति का १८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

इस उपलक्ष्य में ता. ३०-४-१६ से २४-५-१६ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह रात्रीयपारायण स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद पर हुई थी । इस का आयोजन कर्मशक्ति स्वामिनारायण मंदिर की तरफ से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ट्रस्टीश्री तथा समस्त हरिभक्तों ने किया था । कथा पारायण, पोथीयात्रा, महापूजा, अन्नकूट इत्यादि का सुंदर आयोजन किया गया था । यहाँ के सभी हरिभक्तों ने छोटी बड़ी सेवा की थी । अनेक स्थानों से संत पधारे थे जिस में स्वा. हरिकृष्णदासजी, स्वा. निर्गुणदासजी, स्वा. देवप्रकाशदासजी, स्वा. लक्ष्मणजीवनदासजी, गवैया स्वामी के शिष्य बलदेव स्वामी, हरिजीवन स्वामी इत्यादि संत पधारे थे । (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर में श्रीहरि प्रागट्य का उत्सव सम्पन्न

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर में चैत्र शुक्ल-९ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री घनश्याम प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया । मंदिर को रोशनी से सुशोभित करके रात्रि में १०-१० बजे श्रीहरि को चांदी के झुले में झुलाकर हरिभक्तों ने आरती उतारी बाद में उत्सव के साथ प्रागट्योत्सव मनाया गया । इस प्रसंग पर महंत स्वामी के शिष्य स्वा. धर्मविहारीदासजीने मंदिर को रोशनी से खूब सजाया गया था ।

भक्त दर्शन का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किये थे । चैत्र कृष्ण-३ को हम सभी के प्राणप्यारे विश्ववंदनीय प.पू. बड़े महाराजश्री का ७३ वाँ प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया । वडनगर के अ.नि. ईश्वरचरणदासजी की चैत्र कृष्ण-११ तिथी को एक धन्टे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन रखी गई थी । सभी लोग इसमें सामिल होकर लाभ लिये थे । (पुजारी - धर्मविहारीदास - वडनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा उनावा मंदिर के महंत स्वामी भक्तिकेशवदासजी तथा कांकरिया मंदिर के दोनो महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा के पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ५-५-१६ से ९-५-१६ तक शा. विश्वस्वरुपदासजीने कथा पारायण का लाभ दिया था ।

वैशाख शुक्ल-३ को संतो द्वारा ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट आरती की गई । यजमानश्री मुकेशभाई भगाभाई पटेल तथा हरिभाई भगाभाईने संतो के साथ आरती का लाभ लिया था । इस प्रसंग पर जेतलपुर, अंजली, सायला, गुरुकुल, मूली, लींबडी, कालुपुर, बापूनगर से संत पधारे थे । नवगोल के यजमान परिवार के सगे तथा अनेक भक्तों ने दर्शन का तथा कथा का लाभ लिया था । समस्त गाँव, युवक मंडल तथा महिला मंडल ने सुंदर सेवा की थी ।

(श्री न.ना.देव युवक मंडल उनावा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोली २९ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोली का २९ वाँ पाटोत्सव ता. २६-३-१६ फाल्गुन कृष्ण तृतीया को धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसं गपर जेतलपुर मंदिर के संत पधारकर कथा वार्ता करके ठाकुरजी की आरती उतारे थे । पाटोत्सव के यजमानश्री भोगीलाल मणीलाल ठक्कर थे ।

(जयंतीभाई ठक्कर कलोली)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गुलाबपुरा का ६१ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा अ.नि. स.गु.शा. स्वा. हरिस्वरुपदासजी की कृपा से श्री स्वामिनारायण मंदिर गुलाबपुरा का ६१ वाँ पाटोत्सव ता. २४-४-१६ को धूमधाम से मनाया गया था ।

प्रातः ६-०० बजे ठाकुरजी का अभिषेक, ध्वजारोहण, पदयात्रा, का सन्मान, कथा वार्ता, कीर्तन-भक्ति तथा दोपहर में १२ बजे अन्नकूट आरती हुई थी ।

इस प्रसंग पर कालुपुर मंदिर के महंत स्वा. हरिकृष्णदासजी ईडर मंदिर के महंत स्वामी, रघुवीर स्वामी, टोरडा के मंदिर के महंत स्वामी पधारे थे । समस्त गाँव के भक्तों ने पाटोत्सव में सुंदर सेवा की थी । कालुपुर मंदिर के नये ट्रस्टीश्री पटेल गांडाभाई नारायणदास भी उपस्थित थे । पाटोत्सव के यजमान पटेल बाबुभाई मंगलदासभाई थे ।

(अल्पेश टी. पटेल - गुलापपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वसई (डाभला) प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पदार्पण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के स.गु. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा मेहसाणा मंदिर के मंहत स्वा. नारायणप्रसाददाजी की प्रेरणा से वसई श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । सबसे पहले प.पू. महाराजश्रीने मंदिर में बिराजमान ठाकुरजी का पूजन-अर्चन करके आरती की । प्रासंगिक सभा में यजमानश्री चावडा प्रविणसिंह चंदुजी परिवारने धर्मकुल का पूजन-आरती करके आशीर्वाद लिये । यजमान के घर प.पू. महाराजश्री तथा संतोने प्रसाद ग्रहण किया । संतोने सुंदर कथा वार्ता का लाभ दिया । यजमान की तरफ से सभी के लिये फलाहार की व्यवस्था की गई थी । समग्र आयोजन महेसाणा मंदिर के महंत नारायणप्रसाददासजी की देखरेख में किया गया था ।

(भूपेशभाई भावसार)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धिणोज (महेसाणा) ८९ वां पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा तथा जेतलपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशधासजी स.गु. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर धिणोज का ८९ वाँ पाटोत्सव दबे प्रबोधभाई बालमुकुन्ददास (मुंबई) परिवार की तरफ से संपन्न हुआ । जिन्होंने ठाकुरजी के अन्नकूट तथा आरती का लाभ लिया था । यहाँ के बालवा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने कीर्तन भजन की थी - शिक्षापत्री के आधार पर धर्मकुल का विवेचन किया गया था । धिणोज महेसाणा, बालवा के सेवा करने वाले भक्तों का सन्मान किया गया था ।

(असको चौधरी - बाबुलाल चौधरी - महेसाणा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज में ता. ३-५-१६ एकादशी को प्रात: ८-०० बजे से सायं ९-०० बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन का आयोजन हरिभक्तों द्वारा किया गया था । इसका लाभ लेकर भक्तोंने धन्यता का अनुभव किया । सायंकाल ठाकुरजी की आरती करके पूर्णाहुति की गई थी । (कोठारी हेमाभाई पटेल)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) नरनारायण नगर २० वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा धर्मकुल की कृपा से हलवद तालुका के नरनारायणनगर स्वामिनारायण मंदिर (बहनों) का २० वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर बहनों के आमंत्रण पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । तथा ठाकुरजी की आरती उतारकर बहनों को हार्दिक आशीर्वाद दी थी । बहनें धन्यता का अनुभव की थी ।

(प्रति. अनिल बी. दुधरेजिया-ध्रांगध्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोंका) रवारी वाडी हलवद २५ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) हलवद रबारीवाड का २५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर अहमदाबाद से समस्त बहनों की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में बहनों को हार्दिक आशीर्वाद दी थी । इतनी तपती धूप में जब कि ४६ डीग्री तापमान है फिर भी सत्संगी बहनों का मान रखने के लिये प.पू. गादीवालाजी सभी कार्यक्रमो में पधारती हैं । सां.यो. कंचनबा (ध्रांगध्रा) शिष्य मंडल मधुबा, नीताबा, अनीताबा, अंकिताबाने सुंदर सेवा का कार्यक्रम सम्भाली थीं । (प्रति. अनिल बी. दुधरेजिया - ध्रांगध्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर श्रीजीनगर १९ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर श्रीजीनगर का १९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

इस प्रसंग पर हलवद मंदिर से श्रीजी स्वामी, मूली मंदिर से प्रभुजीवन स्वामी ने ठाकुरजी को अन्नकूट आरती उतारकर कथा वार्ता धुन करके भक्तों को प्रसन्न किया था ।

(जिज्ञेस राठोड)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण हिन्दू टेम्पल (आई.एस.एस.ओ.) ओकलेन्ड-न्युझीलेन्ड

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ पर सत्संग के प्रचारार्थ पधारे हुए अमदावाद कालुपुर मंदिर के पू. स.गु. शा.स्वा. निर्गुणदासजी की शुभ उपस्थिति में ता. २९-४-१६ रविवार को श्री स्वामिनारायण मंदिर ओकलेन्ड न्युझीलेन्ड का अष्टम वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

पाटोत्सव के अन्तर्गत प्रात: स्वा. निर्गुणदासजी तथा शा.स्वा. गोलोकविहारीदासजी (बद्रीनाथ मंदिर महंत) के वरद् हाथों से ठाकुरजी का केशर मिश्रित जल से

षोडशोपचार मंत्रो द्वारा अभिषेक किया गया था।

इसके बाद श्रृंगार आरती अन्नकूट आरती तथा सत्संग सभा का आयौजन किया गया था । जिस में शा.स्वा. निर्गुणदासजीने आशीर्वाद के साथ श्रीहरि लीला चरित्र की कथा सुनाई थी।

बाद में प.पू. बड़े महाराजश्री का आशीर्वाद वांचा गया था। साथ में प.भ. डॉ. कांतिभाई पटेल ने अपने विचार व्यक्त किये। पाटोत्सव के मुख्य यजमान विमल जयंतीभाई पटेल चंदनानुलेप के यजमान शरदभाई पटेल तथा अन्य सेवा के यजमानों का सन्मान किया गया था। ७०० जितने भक्तोंने पाटोत्सव के दर्शन का लाभ लिया था।

श्रीहरि जयंती, रामनवमी का उत्सव किया गया जिस में बहुत सारे हरिभक्त दर्शन का लाभ लिये थे। पू.शा.स्वा. निर्गुणदासजी ने यहाँ पर २० दिन तक हरिभक्तों को वचनामृत (२७३) की कथा करके आनंदित किया था।

(तुषारभाई शास्त्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (आई.एस.एस.ओ.) श्री स्वामिनारायण जयंती

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. १५-४-१६ रामनवमी तथा श्रीहरि जयंती के अवसर पर अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ११-४-१६ से ता. १५-४-१६ तक श्रीमद् भागवत दशम स्कन्धकी कथा केतनभाई दशरथभाई भावसार के यजमान पद पर शास्त्री स्वामी अभिषेकप्रसादासजी के वक्तापद पर भाववाही शैली में सम्पन्न हुई थी। कथा में आनेवाले सभी प्रसंग धूमधाम से मनाये गये थे। दोपहर १२ बजे श्रीराम जन्मोत्सव मनाये गये थे। दोपहर १२ बजे श्री राम जन्मोत्सव मनाया गया। बहुत सारे भक्त यजमान बनकर सेवा का लाभ लिये थे। सायंकाल ६ से ८ बजे तक श्रीहरि के प्रागट्य की धुन की गई थी। पू. योगी स्वामी तथा हरिभक्तोंने जन्मोत्सव के कीर्तन गाये। हरिभक्तों ने रास किया। सभी को फलाहार की व्यवस्था श्री नीतेशभाई भगवानजी व्यास की तरफ से की गई थी। प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है। (कीरण भावसार - लेस्टर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन अमेरिका (आई.एस.एस.ओ.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन में स्वा. नरनारायणदासजी की प्रेरणा से यहाँ पर सभी उत्सव धूमधाम से मनाये जाते हैं। चैत्र शुक्ल-९ रामनवमी-श्रीहरि जयंती का उत्सव मनाया गया, जिस में दोहपर को १२-०० बजे रामजन्मोत्सव की आरती तथा सायंकाल स्वामीने श्रीहरि के प्रागट्यकी कथा सुनाकर रात्रि में १०-१० बजे बाल घनश्याम जन्मोत्सव की आरती करके उत्सव मनाया था । १६ अप्रैल शनिवार सायंकाल ५ से ८ बजे तक सत्संग सभा में सभी भक्त कथाश्रवण करके प्रसादी की पादुका का पूजन-अर्चन करके प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किये थे। अपने मंदिर का २९ वाँ पाटोत्सव १९ मई से २२ मई तक धूमधाम से मनाया गया था। (बलदेवभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एटलान्टा (आई.एस.एस.ओ.) श्रीरामनवमी - श्रीहरि प्रागट्योत्सव - श्री हनुमान जयंती तथा प.पू. बड़े महाराजश्री का ७३ वाँ प्रागट्योत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर एटलान्टा में सर्वोपरि श्रीहरि का २३५ वाँ प्रागट्योत्सव, श्री रामनवमी भगवान का प्रागट्योत्सव, श्री हनुमान जयंती तथा प.पू. बड़े महाराजश्री का ७३ वाँ प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर भगवान को सिंहासन पर सजाकर रोशनी करके कीर्तन-भजन-रास करके दोपहर में १२-०० बजे भगवान श्री राम का जन्मोत्सव की आरती की गई । महंत स्वामी ने श्रीहरि लीला चरित्र की कथा की थी । बहुत सारे भक्त यजमान बनकर सेवा किये थे । रात्रि में १०-१० बजे श्री बाल घनश्याम प्रभु को पारणा में झुलाकर प्रागट्योत्सव की आरती की गई थी। श्री हनुमान जयंती के दास भक्ति का सुंदर नाटक के रुप में निरुपण किया गया था। सुंदर कांड का पाठ किया गाय था। कु. जानकीने श्री हनुमान चालीसा का पाठ किया था । श्री हनुमानजी महाराजको अन्नकूट का भोग लगाकर सभी को दर्शन करवाया गया था । प.पू. बड़े महाराजश्री के ७३वें प्रागट्योत्सव के प्रसंग पर उन्हीं के तस्वीर का पूजन करके धुन-भजन-कीर्तन किया गया था। श्रीहरि के धर्मकुल की सेवा-पूजा करने से सकल मनोरथ सिद्ध होता है ऐसा स्वामीने अपनी कथा में बताया था।

(एटलान्टा सत्संग समाज)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीपनी (अमेरिका आई.एस.एस.ओ.) श्री हनुमान जयंती तथा प्रथम पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीपनी में शनिवार-रविवार

विकेन्ड में चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को श्री हनुमान जयंती का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था । स्वा. सत्यस्वरुपदासजी के मार्गदर्शन में हरिभक्तों ने सर्व प्रथम धुन-कीर्तन किया । महंत स्वामीने श्री हनुमानजी का पूजन-अर्चन अभिषेक करके आरती उतारी थी । श्री हनुमानजी की कथा सुनाई प.भ. प्रहलादभाई पटेलने आगामी उत्सवों की जानकारी दी थी । संतो द्वारा यजमानो का सन्मान किया गया था । अपने पारसीपनी श्री स्वामिनारायण मंदिर का प्रथम पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के हरिभक्त तथा चेरीहील, विहोकन, कोलोनिया, तथा पारसीपनी के संत एवं हजुरी पार्षद कनु भगत तथा पा. मूलजी भगत (अयोध्यावाला) की उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया था ।

श्री रामनवमी तथा श्री स्वामिनारायण जयंती एवं प्रथम पाटोत्सव के प्रसंग पर यहाँ के मेयर श्री इत्यादि महानुभावो ने दर्शन का लाभ लिया था । संतो द्वारा ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक करके आरती की गई थी । पधारे हुए संत-पार्षद श्रीहरि की तथा धर्मकुल की महिमा समझाये थे । सेवा करने वाले भक्तों का सन्मान किया गया था । शनिवार को महापूजा का आयोजन किया गया था । सभी भक्तों की सेवा सराहनीय थी । (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया रामनवमी (आई.एस.एस.ओ.) श्री हनुमान जयंती

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कोलोनिया मंदिर चैत्र शुक्ल-९ तथा पूर्णिमा को श्री रामनवमी श्रीहरि जयंती तथा श्री हनुमान जयंती को भव्यता से मनाया गया था । चैत्र शुक्ल-९ बजे सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज का प्रागट्योत्सव की आरती धूमधाम से की गई थी । बहुत सारे यजमान बनकर उत्सव का लाभ लिये थे । चैत्र शुक्ल-१५ को श्री हनुमानजीका पूजन-अर्चन-आरती तथा हनुमान चालीसा का पाठ किया गया था । पार्षद श्री मूलजी भगत ने भगवान का माहात्म्य समझाया था । हनुमानजी की कथा सुनाई थी । दोनो प्रसंग को मंदिर में रोशनी से सजाकर दिव्यता से मनाया गया था । भगतजीने सेवा करने वालों का सन्मान करके उनकी सेवा की प्रसंशा की थी ।

(प्रवीणभाई शाह)

छपैयाधाम बायरन श्री स्वामिनारायण मंदिर (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एटलान्टा में २९ अप्रैल को सायंकाल ५ से ८ बजे तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ सानिध्य में तथा शा.पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) तथा यहाँ के महंत स्वामी श्रीजी स्वामी, पार्षद कनु भगत तथा देश विदेश से पधारे हुए आई.एस.एस.ओ. के प्रेसिडेन्ट इत्यादि अनेक हरिभक्तो की उपस्थिति मे सर्व प्रथम धुन-कीर्तन-कथा तथा आये हुए संतो के प्रेरक प्रवचन के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद देकर सन्मान किया था । अमेरिका, ओस्ट्रेलिया, यु.के. न्युजीलेन्ड, केनेडा इत्यादि स्थानो से पधारे हुए प्रमुखश्री तथा साथ में पधारे हुए भक्तों का पुष्पहार से सन्मान किया गया था । (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन (अमेरिका आई.एस.एस.ओ.) श्री रामनवमी - श्रीहरि प्रागट्योत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से टेकसास के सुगलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर में महंत स्वामी भक्तिनंदनदासजी तथा नीलकंठ स्वामी के मार्गदर्शन से चैत्र शुक्ल-९ को श्रीहरि प्रागट्योत्सव तथा श्री रामनवमी को मंदिर में महापूजा का आयोजन किया गया था । जिसेक यजमान तथा सह यजमान बनकर भक्त लोग लाभ लिये थे । दोपहर १२ बजे श्री रामचंद्र भगवान के प्रागट्योत्सव की आरती उतारी गई थी । स्वामीने श्रीहरि के प्रागट्योत्सव की सुंदर कथा की थी । रात्रि में १०-१० बजे सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रागट्योत्सव की आरती धूमधाम से की गई थी । चैत्र शुक्ल-१५ को श्री हनुमान जयंती की आरती के साथ हनुमानजी का पूजन-अर्चन किया गया था । दोनो प्रसंग के यजमानों का महंत स्वामीने पुष्पहार से सन्मान किया था । हरिभक्त बडी संख्या में उपस्थित होकर दर्शन करके प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किये थे ।

(प्रवीण शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

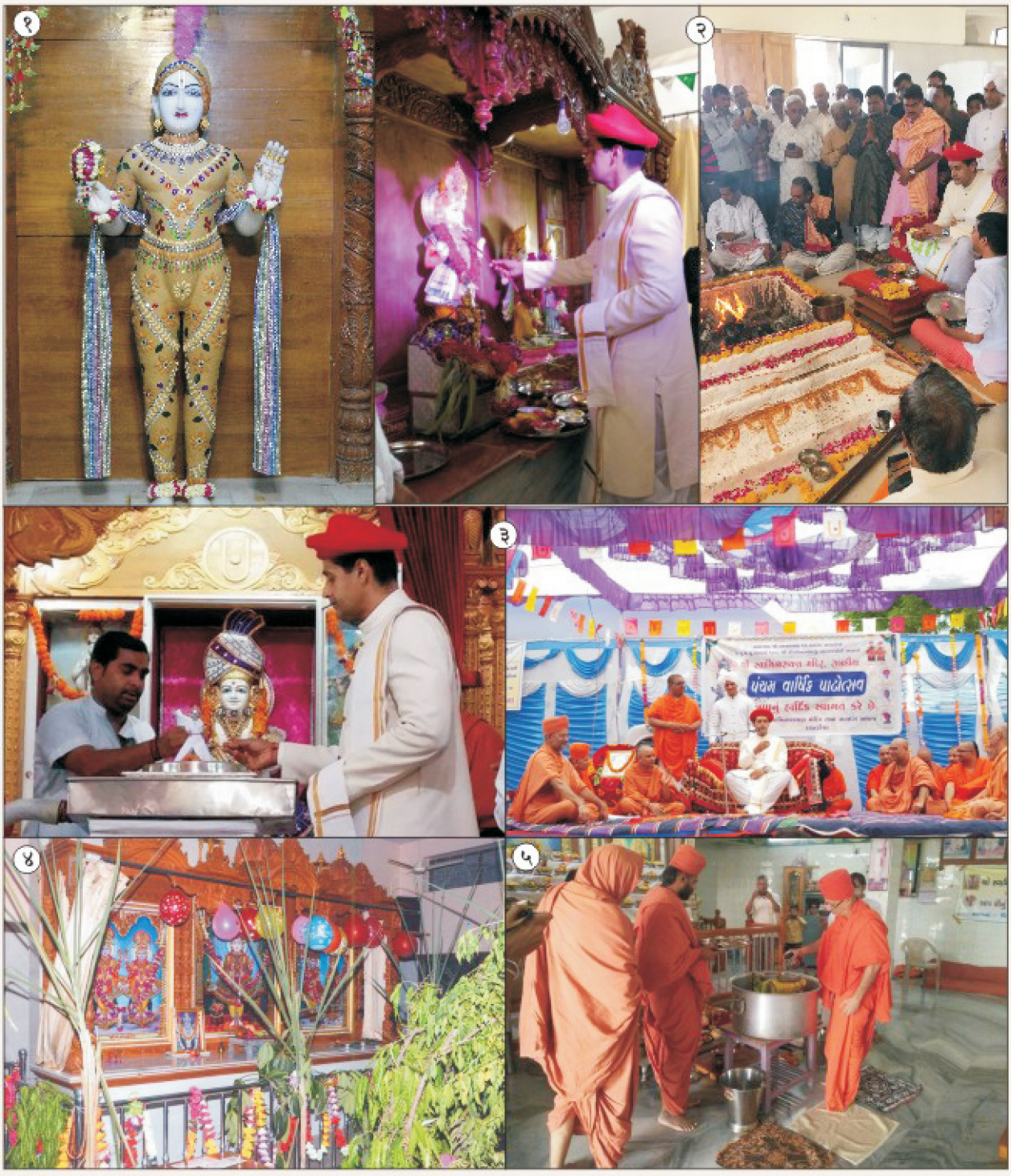

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ गांधीनगर में ठाकुरजी का चन्दन चर्चित दर्शन ।(२) श्री स्वामिनारायण मंदिर सादरा नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए तथा यज्ञ विधिकरते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(३) श्री स्वामिनारायण मंदिर राबडीया का पांचवें पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये तथा सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री तथा संत मंडल ।(४) श्री स्वामिनारायण मंदिर बिलोदरा में श्रीहरि जयंती - रामनवमी का दर्शन ।(५) श्री स्वामिनारायण मंदिर डीसा में ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये पू. महंत स्वामी (अमदावाद) आदि संत ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

(१) अपने ओकलेन्ड (न्युजीलेन्ड) मंदिर के आठवां पाटोत्सव प्रसंग पर सभा में सत्संग कराते हुये पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी साथ में बद्रीनाथ मंदिर के महंत गोलोकविहारीदासजी ।(२) अपने एटलान्टा मंदिर में हनुमान जयंती प्रसंग पर हनुमानजी के जीवन चरित्र पर नाटक प्रस्तुत करते हुये हरिभक्त ।(३) डिट्रोईट मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री के प्रागट्योत्सव की आरती उतारते हुए संत-हरिभक्त ।(४) नोर्थ कोरोलिया चेप्टर में सत्संग सभा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(५) लेस्टर मंदिर में श्रीहरि प्रागट्योत्सव प्रसंग को मनाते हुये हरिभक्त ।

Praful Kharsani